तिमिरता नाश करने का पर्व

दीपावली अर्थात 'दीपों की श्रृंखला' या 'दीपों की पंक्ति'। सर्वत्र अंधकार को तिरोहित कर पृथ्वी के कण-कण को आलोकित करने वाला ये दीपोत्सव भारत के सबसे महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है। कार्तिक अमावस्या की तिमिरता का नाशकर सर्वत्र सुचिता और आत्मिक समृद्धि को बिखेरता यह पर्व नकारात्मकता और अज्ञानता पर विजय का सच्चा उद्घोष है। इस दिन धन संपदा और समृद्धि का आशीर्वाद पाने के लिए मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है। मां लक्ष्मी की पूजा केवल भौतिक सुख के लिए नहीं, बल्कि आत्मिक समृद्धि और आंतरिक शांति के लिए करते हैं।

डॉ. अनिल मिश्रा पार्थ
साहित्यकार

दीपावली

दीपोत्सव के संबंध में अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि जब देवताओं व असुरों द्वारा समुद्र मंथन किया गया तो 14 रत्नों के साथ-साथ भगवान धन्वंतरि भी अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन भगवान धन्वंतरि का प्राकट्य हुआ था, जिसे धनतेरस के रूप में मनाते हैं। इस दिन धनाध्यक्ष कुबेर, आरोग्य के देवता धन्वंतरि व यम की पूजा की जाती है। तत्पश्चात कार्तिक अमावस्या को माता महालक्ष्मी का प्राकट्य भी उसी अगम सिंधु के गर्भ से हुआ। माता लक्ष्मी के भूलोक अवतरण पर देवताओं द्वारा प्रथम दीपावली मनाई गई। बहुप्रचलित कथाओं में दूसरी कथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की है, जिन्होंने विश्वविदित दैत्यराज रावण का वध कर जब 14 वर्षों बाद अपनी जन्मभूमि अयोध्या में प्रवेश किया तब उनके आगमन पर प्रफुल्लित हो अयोध्यावासियों ने समस्त नगर को दीपमालिकाओं से सजा देव दुर्लभ दीपावली मनाई। एक अन्य कथानक द्वापर युग का भी प्रचलन में मिलता है, जिसमें भगवान कृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध कर जनता को उसके आतंक से मुक्त किया। अगले दिन गोपवासियों ने आनंदोत्सव स्वरूप दीपावली मनाई। दीपावली से जुड़े अनेक ऐतिहासिक तथ्य भी हमारे सामने आते हैं। ऐतिहासिक तथ्य के रूप में जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की मृत्यु भी दीपावली के दिन पावापुरी (बिहार) में हुई थी। एक अन्य तथ्य के अनुसार दीपावली के दिन ही उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक किया गया था। यही नहीं सिक्खों के पांचवें गुरु अर्जुन देव ने विश्वप्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर का निर्माण भी दीपावली के दिन ही प्रारंभ किया था। इसी सिक्खों के छठे गुरु हरगोविंद सिंह को कारागार से रिहा किया गया था। स्वामी दयानंद सरस्वती और स्वामी रामतीर्थ की मृत्यु भी दीपावली के दिन ही हुई थी। एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि नेपाल के नववर्ष का प्रारंभ भी दीपावली के दिन से होता है।

ऐश्वर्य और समृद्धि की देवी मां विष्णुप्रिया लक्ष्मी के आगमन हेतु घरों में पारंपरिक रूपांकनो की रंगोलियां गृह द्वारों पर निर्मित की जाती है। गृह द्वारों को नाना प्रकार की साज-सज्जाओं से सज्जित किया जाता है। घर के बाहर शुभ दीपमालिकाओं की पावन पंक्तियां इस आलोक पर्व को ज्योर्तिमय कर शुभ्रता को सर्वत्र बिखेर देती है। कुमकुम व चावल के आटे से गृह द्वारों पर निर्मित मां के पदचिन्ह उनके आगमन के सच्चे प्रतीक बन बाट जोहते नजर आते हैं।

दीपोत्सव का पूजन विधान

इस दीपोत्सव के पूजन विधान हेतु सर्वप्रथम स्थान को पवित्र कर, एक सुंदर मंच बना, उस पर नया गुलाबी या लाल रंग का कपड़ा बिछाते हैं। तत्पश्चात कपड़ों के बीचों-बीच मुट्ठी भर अनाज छिड़क उस पर सोने-चांदी या तांबे का पानी से भरा कलश रखा जाता है, जिसमें फूल, सुपारी, सिक्का व चावल के कुछ दानों को डाल, कलश मुख को आम्र पत्तों से सजाया जाता है। कलश मुख के शीर्ष पर चावल से भरे पात्र को रखा जाता है। जिस पर हरिद्रा के चूर्ण से कमल बना मां लक्ष्मी को प्रतिष्ठित किया जाता है। प्रतिष्ठा के पश्चात कलश के चारों ओर कुछ सिक्के रखें जाते हैं और कलश के सामने भगवान गणेश की मूर्ति की प्रतिष्ठा दक्षिण पश्चिम दिशा में दाई ओर की जाती है। प्रतिष्ठा उपरांत मूर्तियों के सम्मुख पंच दीपों वाला दिया रखा जाता है। मां लक्ष्मी की पूजा में दीपक उत्तर दिशा की ओर रखा जाता है, जबकि पूजन करने वाले का मुख दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। मां लक्ष्मी के पूजन में श्री यंत्र, कौड़ी, कमलगट्टा, लाल पुष्प, केवड़ा, स्वर्णाभूषण, रत्न आदि के रखे जाने का प्रावधान है। जिस कक्ष में ये पूजा की जा रही, उस कक्ष के दोनों तरफ स्वस्तिक चिन्ह अंकित किया जाना चाहिए। पूजन की शुरुआत विघ्नहर्ता गणेश जी पर फूल, कुमकुम, अक्षत आदि अर्पित कर करते है। तत्पश्चात मां लक्ष्मी का पूजन आरंभ होता है, जिसमें मां लक्ष्मी का आवाहन कर उनकी प्रतिमा को शुद्धोदक स्नान कराकर केवड़ा, चंदन इत्यादि इत्र से सुगंधित कर, रेशमी वस्त्र पहनाते हैं। स्वर्ण आभूषणों व रत्नों से सुसज्जित कर मां लक्ष्मी को वेदी पर पुनः आसीन करते हैं। विविध सामग्रियों से उनका विधान युक्त पूजन कर नैवेद्य अर्पित करते हैं। मिठाई में केसर युक्त मिठाई व हलवा मां को अधिक रुचिकर है। उनके आगे जलाए गए दिए अनिवार्यता गाय के घी के मूंगफली तेल या फिर तिल्ली के तेल के होने चाहिए। अंत में मां की आरती कर दिए को घर के प्रत्येक कोने में रख सभी पारिवारिक जनों में प्रसाद वितरित करना चाहिए।

बोध कथा

ब्रह्मचारी की परीक्षा

हम एक बार की बात है कि महर्षि वेदव्यास अपने आश्रम में तरुण ब्रह्मचारियों को व्याख्यान दे थे। इस व्याख्यान के दौरान वे बता रहे थे कि तरुण ब्रह्मचारियों को स्त्रियों से हमेशा सावधान और सतर्क होना चाहिए, क्योंकि काम का आवेग बहुत शक्तिशाली होता हैं। अतः किसी भी ब्रह्मचारी के शिकार हो जाने का खतरा हैं। यह सुनकर वहां उपस्थित ब्रह्मचारियों में से एक तरुण ब्रह्मचारी खड़ा हुआ और बोला "गुरुजी ! आपका कथन गलत हैं। मुझे कोई भी स्त्री अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती। मैं पूर्ण ब्रह्मचारी हूं।" वेदव्यास जी बोले- "जैमिनी ! तुम्हें जल्द ही अनुभव हो जाएगा। मैं अभी कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूं। मैं तीन महीने में लौटूंगा। सावधान रहना और अहंकार में आकर अपनी अति प्रशंसा मत करना।" महर्षि वेदव्यास ने अपनी योगिक शक्ति से एक ऐसी सर्वांगपूर्ण सुंदर युवती का रूप धारण कर लिया, जिसके ह्रदय को भेदने वाले तीखे नयन, जिसका चेहरा सौम्य व मोहक, जिसका शरीर अति सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित था। यह सुंदर युवती संध्या के समय एक पहाड़ पर एक पेड़ के नीचे जाकर खड़ी हो गई। अकस्मात बादल इकट्ठे हो गए और वर्षा प्रारंभ हो गई।

संयोग से उस समय जैमिनी भी जंगल से आते हुए पेड़ के पास से ही गुजर रहा था। उस युवती को जंगल में ऐसे अकेला देख उसे दया आ गई। उसने उसे संबोधित करते हुए कहा, "अरे ! ओह देवी जी ! अगर आप बुरा न माने तो मेरे साथ आकर मेरे आश्रम में ठहर सकती हैं।" युवती बोली, "क्या तुम अकेले रहते हो?, क्या वहां कोई अन्य स्त्री हैं? जैमिनी ने कहा, "मैं अकेला हूं, परंतु आप निश्चिंत रहिए देवी ! मैं पूर्ण ब्रह्मचारी हूं। मुझे काम पीड़ित नहीं कर सकता। मैं संपूर्ण विकारों से मुक्त हूं। आप वहां निशंक रह सकती हैं।" युवती बोली, "एक तरुण कुमारी कन्या का एक ब्रह्मचारी के साथ रात्रि में अकेले रहना उचित नहीं हैं।" जैमिनी ने कहा, "ओह देवी ! भयभीत मत होइए। मेरा विश्वास कीजिए। मेरा ब्रह्मचर्य पूर्ण हैं। मैं शपथ लेता हूं कि आपको कोई हानि नहीं होंगी।" तब युवती रात्रि में उसके आश्रम में रहने को सहमत हो गई। जैमिनी आश्रम के बाहर और युवती आश्रम के अंदर सोई। लगभग आधी रात के समय, जैमिनी के मन में वासना की ललक उठी, किंतु उसने इसे उपेक्षित कर दिया। फिर से सो गया। इस बार तेज ठंडी-ठंडी हवाएं चलने लगी।

> जैमिनी ने कहा, "ओह देवी ! भयभीत मत होइए। मेरा विश्वास कीजिए। मेरा ब्रह्मचर्य पूर्ण हैं। मैं शपथ लेता हूं कि आपको कोई हानि नहीं होंगी।"

जैमिनी उठा और दरवाजा खटखटाया और कहा, "ओह देवी ! बाहर बहुत ज्यादा ठंडी हवाएं चल रही हैं। मैं इन्हें सहन नहीं सकता। इसलिए मैं अंदर सोना चाहता हूं।" तो उस युवती ने दरवाजा खोल दिया। अब जैमिनी अंदर सो रहा था। इस बार फिर उसके मन में एक तीव्र वासना की ललक उठी। इस बार, क्योंकि वह उसके निकट सो रहा था। अतः वह उसकी सांसों को सुन रहा था तथा उसकी महक को महसूस कर रहा था। इस बार वह अपना विवेक खो बैठा और उठकर उस सुंदरी का आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ा ही था कि वेदव्यास ने अपना असली रूप धारण कर लिया और कहा, "ओह मेरे प्रिय जैमिनी ! कहां हैं तुम्हारा पूर्ण ब्रह्मचर्य? क्या तुम अब भी पूर्ण ब्रह्मचर्य में स्थित हो? क्या कहा था तुमने, जब में व्याख्यान दे रहा था?" जैमिनी ने शर्म से अपना सिर झुका लिया और बोला, "गुरुजी ! मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए।"

-फीचर डेस्क

सनातन धर्म का अर्थ एवं स्वरूप

अक्सर यह जानने की जिज्ञासा बनी रहती है कि सनातन धर्म क्या है? सनातन धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है? क्योंकि समाज में कई प्रकार की भ्रांतियां पहले से ही मौजूद हैं। प्राचीन काल में कुछ इसी प्रकार का धर्म विषयक भ्रम अर्जुन को भी था, जिसमें वह युद्ध न करने का कारण बताते हुए श्रीकृष्ण से कहते हैं, यदि सभी का नाश हो जाएगा, तो सनातन धर्म नष्ट हो जाएगा।

दीपांशी सैनी
रिसर्च स्कॉलर

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। (श्रीमद्भगवद्गीता 1/39)-कुल के नाश से सनातन वंश परंपरा का नाश हो जाएगा, जिससे सनातन धर्म का नाश हो जाएगा। श्रीकृष्ण द्वितीय अध्याय में अर्जुन से हंसते हुए कहते हैं। बातें तो बड़ी-बड़ी करते हो, परंतु ऐसा विचार तम्हें आया कैसे? सुनो अर्जुन अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। (श्रीमद्भगवद्गीता 2/17)-जो संपूर्ण शरीर में व्याप्त है वही अविनाशी है वह आत्मा है।

नाभावो विद्यते सतः (श्रीमद्भगवद्गीता 2/16) उस सत् का कहीं भी अभाव नहीं है। न ही उसे शस्त्र से काटा जा सकता है न ही जलाया जा सकता है।

नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 2/24)-वही नित्य है, कूटस्थ, सर्वव्यापी है। स्थिर है वह ही एकमात्र सनातन है। कुछ लोग इसे आश्चर्य की तरह देखते हैं, कुछ लोग आश्चर्य की तरह सुनते हैं और कुछ इसे समझ ही नहीं पाते। अर्थात सिर्फ आत्मा ही सनातन है, जिसे परमात्मा स्वरूप बताया गया है, जो इस परमात्मा के प्रति सचेत है वही सनातन धर्म का पालन करते हैं। सनातन धर्म का लक्ष्य मोक्ष है, उस मोक्ष को पाने के लिए ह्रदय में स्थित उस सत्य स्वरूप परमात्मा में लीनता आवश्यक है। जिसे आत्म नियंत्रण द्वारा प्राप्त किया जाता है। किसी बाहरी संसार में नहीं अपितु अपने ही भीतर सनातन परमात्मा को खोजना है। सनातन सत्य के लिए जो धर्म प्रेरित करे वही सनातन धर्म है। अर्थात् सनातन धर्म उन मूल्यों को अंगित करता है, जो अपरिवर्तनीय है आत्मा, ब्रह्म, प्रकृति के मूल तत्व, मोक्ष ये सभी सदा सत्य है। इन सभी तत्वों का ज्ञान कराना व इनके अनुसार अपने आचरण व्यवहार को व्यवस्थित करना इस धर्म की शिक्षा है।

इस सत्य का ज्ञान कराने के लिए

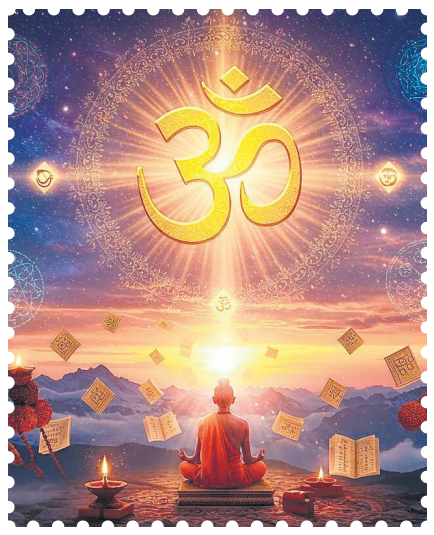

अनेक महापुरुषों ने कई मार्ग बताए हैं।

ऋग्वेद में कहा गया है- एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग्वेद 1/64/46) अर्थात एक ही सत् की विद्वानों ने अलग-अलग प्रकार से व्याख्या की है, परंतु सत्य हमेशा से एक ही रहा है महाभारत में भी कहा गया है।

धर्मस्य तत्व निहित गुहाया (महाभारत, वनपर्व, आरणेय पर्व, 313/117)-अतः इस धर्म का तत्व बहुत ही गूढ़ है। इसलिए महापुरुष जो मार्ग बताए उसी का अनुसरण करना चाहिए।

इसी कारण सनातन धर्म में कई मतों का समावेश देखने को मिलता है।

महाभारत में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को धर्म का स्वरूप बताते हुए कहा कि कोई इस धर्म को तर्क द्वारा जानने का प्रयास करता है, कुछ लोग वेदों से धर्म को उजागर मानते है, परंतु महात्माओं ने एक ही धर्म का वास्तविक स्वरूप निश्चित किया है।

यत् स्यादहिंसासंयुक्त स धर्मइति निश्चयः। (महाभारत, कर्णपर्व, 69/57)- अंहिसा ही परम धर्म है, जहां किसी भी प्राणी की निरपराध मन, वचन, कर्म से भी हिंसा न हो वहीं वास्तविक सनातन धर्म है।

श्रीमद्भागवद महापुराण में धर्म के कुछ लक्षण बताएं हैं, जिनमें सत्यं दया तपस्या, शौच, मन का सयम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग, स्वाध्याय, संतोष सेवा, समदर्शी, उचित अनुचित का जान इत्यादि। (श्रीमद्भागवद महापुराण 7/11/8-10)

इन सभी धर्म के लक्षणों को आचरण में परिलक्षित करने पर धर्म प्रतिष्ठित होता है। संतोष मूलस्त्यागात्मा ज्ञानाधिष्ठानमुच्यते।
अपवर्गमतिर्नित्यो यतिधर्मः सनातनः।।
(महाभारत-शांतिपर्व, मोक्षधर्म पर्व, 270/31)
जहा संतोष है, त्याग है, जान है मोक्षदायिनी बुद्धि है। ब्रह्म साक्षात्कार की वृत्ति है, वहीं सनातन धर्म है।